shrIpuruShottamamAhAtmyam

श्रीपुरुषोत्तममाहात्म्यम्

Document Information

Text title : puruShottamamAhAtmyam

File name : puruShottamamAhAtmyam.itx

Category : vishhnu, krishna, mAhAtmya, vishnu

Location : doc_vishhnu

Transliterated by : Ananth Raman

Proofread by : Ananth Raman, NA

Description/comments : Brahmavaivartapurana, ShrikriShnajanmakhanda (4), adhyAya 126 and Padmapurana, Patalakhanda (5) adhyAya 82

Latest update : May 1, 2021

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

shrIpuruShottamamAhAtmyam

श्रीपुरुषोत्तममाहात्म्यम्

(ब्रह्मवैवर्तपुराणाततः)

श्रीकृष्ण उवाच -
(शृणु राधे प्रवक्ष्यामि ज्ञानमाध्यात्मिकं परम् ।
यच्छ्रुत्वा हालिको मूर्खः सद्यो भवति पण्डितः ॥ ८२ ॥

जात्याऽहं जगतां स्वामी किं रुक्मिण्यादियोषिताम् ।
कार्यकारणरूपोऽहं व्यक्तो राधे पृथक् पृथक् ॥ ८३॥

एकात्माऽहं च विश्वेषां जात्या ज्योतिर्मयः स्वयम् ।
सर्वप्राणिषु व्यक्त्या चाप्याब्रह्मादितृणादिषु ॥ ८४॥

एकस्मिंश्च भुक्तवति न तुष्टोऽन्यो जनस्तथा ।
मय्यात्मनि गतेऽप्येको मृतोऽप्यन्यः सुजीवति ॥ ८५ ॥)

जात्याऽहं कृष्णरूपश्च परिपूर्णतमः स्वयम् ।
गोलोके गोकुले रम्ये क्षेत्रे वृन्दावने वने ॥ ८६॥

द्विभुजो गोपवेषश्च स्वयं राधापतिः शिशुः ।
गोपालैर्गोपिकाभिश्च सहितः कामधेनुभिः ॥ ८७॥

चतुर्भुजोऽपि वैकुण्ठे द्विधारूपः सनातनः ।
लक्ष्मीसरस्वतीकान्तः सततं शान्तविग्रहः ॥ ८८॥

यन्मानसीसिन्धुकन्या मर्त्यलक्ष्मीपतिर्भुवि ।
श्वेतद्वीपे च क्षीरोदे तत्रापि च चुतुर्भुजः ॥ ८९॥

अहं नारायणर्षिश्च नरो धर्मः सनातनः ।
धर्मवक्ता च धर्मिष्ठो धर्मवर्त्मप्रवर्तकः ॥ ९०॥

शान्तिर्लक्ष्मीस्वरूपा च धर्मिष्ठा च पतिव्रता ।
अत्र तस्याः पतिरहं पुण्यक्षेत्रे च भारते ॥ ९१॥

सिद्धेशः सिद्धिदः साक्षात् कपिलोऽहं सतीपतिः ।
नानारूपधरोऽहं व्यक्तिभेदेन सुन्दरि ॥ ९२॥

अहं चतुर्भुजः शश्वद् द्वार्वत्यां रुक्मिणीपतिः ।
अहं क्षीरोदशायी च सत्यभामागृहे शुभे ॥ ९३॥

अन्यासां मन्दिरेऽहं च कायव्यूहात् पृथक् पृथक् ।
अहं नारायणर्षिश्च फाल्गुनस्य सारथिः ॥ ९४॥

स नरर्षिर्धर्मपुत्रो मदंशो बलवान् भुवि ।
तपसा राधितस्तेन सारथ्येऽहं च पुष्करे ॥ ९५॥

यथा त्वं राधिका देवी गोलोके गोकुले तथा ।
वैकुण्ठे च महालक्ष्मीर्भवती च सरस्वती ॥ ९६॥

भवती मर्त्यलक्ष्मीश्च शान्तिर्लक्ष्मीस्वरूपिणी ।
कपिलस्य प्रिया कान्ता भारते भारती तथा ॥ ९७॥

त्वं सीता मिथिलायां च त्वच्छाया द्रोपदी सती ।
द्वारवत्यां महालक्ष्मीभवती रुक्मिणी सती ॥ ९८॥

पंचानां पाण्डवानां च भवती कलया प्रिया ।
रावणेन हृता त्वं च त्वं च रामस्य कामनी ॥ ९९॥

नानारूपा यथा त्वं च छायया कलया सती ।
नानारूपस्तथाऽहं च स्वांशेन कलया तथा ॥ १०१॥

परिपूर्णतमोऽहं च परमात्मा परात्परः ।
इति ते कथितं सर्वमाध्यात्मिकमिदं सति ।
राधे सर्वापराधं मे क्षमस्व परमेश्वरि ॥ १०२॥

(श्रीकृष्णवचनं श्रुत्वा परितुष्ट च राधिका ।
परितुष्टश्च गोप्यश्च प्रणेमुः परमेश्वरम् ॥ १०३॥)

इति ब्रह्मवैवर्तपुराणे श्रीकृष्णजन्मखण्डान्तर्गतं
श्रीपुरुषोत्तममाहात्म्यं सम्पूर्णम् । (अध्यायः १२६)

श्रीकृष्णद्वारा अपने और राधातत्त्व का उद्घाटन-
"हे राधे मैं स्वभाव से सब लोकों का स्वामी हूँ, फिर
रुक्मिणी आदि स्त्रियों की तो बात ही क्या है । मैं कार्य-कारण रूप से

पृथक्-पृथक् प्रकट होता हूँ । हे राधे ! मैं स्वभाव से स्वयं ज्योतिर्मय हूँ, अखिल विश्व-ब्रह्माण्ड का एकमात्र आत्मा (अन्तर्यामी) हूँ और ब्रह्मादि से लेकर स्तम्ब-पर्यन्त सम्पूर्ण प्राणियों में व्याप्त हूँ । हे राधे ! मैं स्वभाव से स्वयं परिपूर्णतम कृष्णरूप से रहता हुआ रमणीय क्षेत्र गोलोक, गोकुल और वृन्दावन के वन-वन में तुम्हारे साथ नित्य-विहार करता हूँ । हे राधे ! मैं स्वयं उपर्युक्त इन धामों में तुम्हारा पति द्विभुज होकर गोपवेष में बालक रूप से क्रीडा करता हूँ और ग्वाल, गोपियाँ गोएँ ही मेरी लीला में सहायक होती हैं । हे राधे ! मैं वैकुण्ठ में चतुर्भुज रूप से रहता हूँ, वहाँ मैं ही लक्ष्मी और सरस्वती का पति हूँ और सदा शान्त रूप से निवास करता हूँ । इस प्रकार मैं परब्रह्म ही दो रूपों में विभक्त हूँ । हे राधे ! भूतलपर, श्वेतद्वीप और क्षीरसागर में क्रमशः मानसीकन्या, सिन्धुकन्या और मर्त्यलक्ष्मी के जो पति हैं वह भी मैं हूँ और वहाँ मैं चतुर्भुज रूप से रहता हूँ । हे राधे ! मैं नर-नारायण ऋषि हूँ और सनातन धर्म हूँ । मैं धर्मवक्ता हूँ तथा धर्मिष्ठ हूँ और धर्ममार्ग का प्रवर्तक हूँ । हे राधे! इस पुण्यक्षेत्र भारतवर्ष में जो धर्मिष्ठा तथा पतिव्रता शान्तिस्वरूपा लक्ष्मी है, उसका पति मैं ही हूँ । हे सुन्दरि ! सिद्धेश्वर सिद्धिदाता साक्षात् कपिल मैं ही हूँ । इस प्रकार व्यक्ति-भेद से मैं (कृष्ण) हर तरह का रूप धारण करता हूँ ।"

हे सुन्दरि ! मैं चतुर्भुजरूप धारणकर सदा द्वारका(१) में रुक्मिणी का पति होता हूँ और क्षीरसागर में शयन करने वाला मैं ही सत्यभामा के सुन्दर भवन में निवास करता हूँ । हे राधे ! द्वारका में अन्यान्य रानियों के भवनों में भी मैं ही पृथक्-पृथक् शरीर-धारणकर क्रीडा करता हूँ । मैं नारायण इस अर्जुन का सारथि हूँ । हे राधे ! अर्जुन नर-ऋषि है, धर्म का पुत्र है और बलवान् है । मेरे अंश से भूतल पर प्रकट हुआ है । उसने पुष्करक्षेत्र में सारथि-कार्य के तप द्वारा मेरी राधना की है । हे राधे ! जैसे तुम गोलोक में राधिका देवी हो, उसी तरह गोकुल में भी हो । तुम्हीं वैकुण्ठ में महालक्ष्मी और

सरस्वती हो । हे राधे ! क्षीरोदशायी की प्रिया और महालक्ष्मी तुम्ही हो । भारत में सती तुम हो, भारती तुम्हारा ही नाम है । तुम कपिल की प्यारी पत्नी हो । तुम्हीं मिथिला में सीता नाम से विख्यात हो और सती द्रोपदी तुम्हारी छाया है । हे राधे ! द्वारका में महालक्ष्मी के अंश से प्रकट हुई सती रुक्मिणी के रूप में तुम्हीं निवास करती हो । पाँचों पाण्डवों की पत्नी द्रोपदी तुम्हारी कला से प्रकट हुई है । हे राधे! तुम्ही दाशरथि रामचन्द्र की भार्या होकर रावण द्वारा हरण की गयी थीं । जैसे तुम अपनी छाया और कला से नानारूपों में सम्पूर्ण विश्व में प्रकट होती हो, वैसे ही मैं भी अपने अंश और कला से अनेक रूपों में व्यक्त होता हूँ । मैं परिपूर्णतम परात्पर परमात्मा हूँ । हे सती ! हे राधे ! इस प्रकार मैंने तुमको यह सब आध्यात्मिक युग्मतत्त्व का माहात्म्य बता दिया है । अब हे परमेश्वरि ! तुम मेरे सब अपराधों को क्षमा कर दो ।

(१) द्वारका- द्वारे द्वारे कं - ब्रह्म यस्यां पूर्यां सा द्वारका । कं ब्रह्म खं ब्रह्मेति श्रुतेः । अर्थ - द्वार-द्वार मे "क" नाम ब्रह्म जिस पूरी में वह द्वारका हैं ।

राधाजी की शरण से कृष्ण वश में हो जाते हैं-

सकृदावां प्रपन्नो वा मत्प्रियामेकिका सुत ।
सेवतेऽवन्यभावेन स मामेति न संशयः ॥ ८३॥

यो मामेव प्रपन्नश्च मत्प्रियां न महेश्वर ।
न कदापि स चाप्नोति मामेवं ते मयोदितम् ॥ ८४॥

सकृदेव प्रपन्नो यस्तवास्मीति वदेदपि ।
साधनेन विनाप्येव मामाप्नोति न संशयः ॥ ८५॥

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन मत्प्रियां शरणं व्रज ।
आश्रित्य मत्प्रियां रुद्र मां वशीकर्तुमर्हसि ॥ ८६॥

इदं रहस्य परमं मया ते परिकीर्तितम् ।
त्वयाप्येतन्महादेव गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ८७॥

त्वमप्येनां समाश्रित्य राधिकां मम वल्लभाम् ।
जपन्मे युगलं मन्त्रं सदा तिष्ठ मदालये ॥ ८८॥

(पद्मपुराण पातालखण्ड(५) अध्यायः ८२)

विश्वात्मा भगवान् श्रीकृष्ण के प्रसाद से ब्रह्मा और क्रोध से रुद्र उत्पन्न हुए हैं । (श्रीमद्भागवत १२/५/१) अतः ये दोनों उनके ही पुत्र हैं । इसलिये भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं-हे पुत्र (शिव) जो प्रपन्न (शरणागत) एक बार हम दोनों की शरण में आ जाता है और आकर मेरी उपासना करता है, वह निस्सन्देह मुझ को प्राप्त हो जाता है । हे महेश्वर ! इसके विपरीत (उल्टा) जो केवल मेरी शरण में आ गया है, पर मेरी प्रिया राधाजी की शरण में नहीं गया, वह कभी भी मुझे प्राप्त नहीं कर सकता है । यह मैंने तुमसे गुह्य बात बताई है । जो प्रपन्न एक बार ही हम दोनों की शरण में आकर "मैं आप दोनों (युगल प्रिया-प्रियतम) का हूँ" यों कह देता है, वह बिना साधन के भी मुझे प्राप्त कर लेता है । इसमें कोई संशय नहीं है । इसलिये हे रुद्र ! तुम सब प्रकार से प्रयत्न करके मेरी प्रिया राधाजी की शरण में जाओ, तुम मेरी प्रिया का सहारा लेकर ही मुझे वश में कर सकते हो । हे महादेव! तुम्हें भी इसको प्रयत्न से गोपन रखना चाहिये । अब तुम मेरी प्रिया राधाजी की शरण लेकर हमारे युगल नाम महामन्त्र का जप करते हुए सदा हमारे आलय-श्रीधाम वृन्दावन में रहो ।

First four verses and the last one are included as a reference and are not translated.

Encoded and proofread by Ananth Raman

shrIpuruShottamamAhAtmyam
pdf was typeset on February 2, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*